



शोध भूमि

शिक्षा एवं शिक्षण शास्त्र विषय की पूर्व समीक्षित शोध पत्रिका

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बदलते समय में महिलाओं का योगदान

डॉ. चारु रानी

सहायक प्राध्यापिका

एमिटी इंस्टीट्यूट ऑफ एजुकेशन

एमिटी विश्वविद्यालय, नोएडा, उत्तर प्रदेश, भारत

ईमेल : crani@amity.edu

सारांश

भारत की समृद्ध सामाजिक विरासत का अभिन्न अंग होने के नाते, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत ने विभिन्न सामाजिक परिवेशों में युगों-युगों तक प्रगति की है। वैदिक काल से लेकर वर्तमान युग तक इस सामाजिक क्षेत्र में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण रही है, हालांकि पुरुष प्रधान व्यवस्था में उनके योगदान को अधिकतर नजरअंदाज किया गया है। यह शोधपत्र विभिन्न सामाजिक कालों में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की प्रगति को प्रस्तुत करना है जिसमें महिला कलाकारों, संगीतकारों, शिक्षकों या नवप्रवर्तकों की भूमिका तथा उनकी भूमिका में परिवर्तन लाने वाले कारकों पर विशेष बल देना है। कुछ योगदान देने वाले कारकों में संगीत अकादमियों की स्थापना, जनसंचार माध्यमों का उदय, सामाजिक सुधारक और पुरस्कारों के रूप में सरकारी मान्यता सम्मिलित हैं। हीराबाई बरोडेकरजी, केसरबाई केरकर जी, गंगूबाई हंगल जी तथा किशोरी अमोनकर जी जैसी दिग्गज महिलाओं की विभिन्न जीवनियों के माध्यम से यह दर्शाया जाएगा कि महिलाओं ने संगीत के क्षेत्र में इन तकनीकी बाधाओं को दूर करने के लिए सामाजिक सीमाओं को कैसे पार किया। आज का परिदृश्य, हालांकि सामाजिक सीमाओं से भरा हुआ है, फिर भी हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए उचित प्रगति दर्शाता है।

मुख्य शब्द— हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, महिलाओं, योगदान, सामाजिक सीमा।

1. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत भारतीय उपमहाद्वीप के उत्तरी भागों की एक प्राचीन संगीत परंपरा है, जिसमें रागों (मधुर विधाओं) और तालों (लयबद्ध विधाओं) का विशेष महत्व है। यह विशेष रूप से ध्रुपद, खयाल, तुमरी और तप्पा जैसी गायन विधाओं के लिए प्रसिद्ध है, जिनमें सितार, सरोद या तबला जैसे वाद्य यंत्रों का प्रयोग किया जाता है। हिंदू समाज में पंडितों के नाम से जाने जाने वाले कलाकार इसका पालन करते हैं, जबकि मुस्लिम समाज में उन्हें उस्ताद कहा जाता है। ये व्यक्ति भारतीय ताने-बाने का अभिन्न अंग हैं और उन्होंने भारतीय संस्कृति को महत्वपूर्ण रूप से आकार दिया है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत का सार राग और ताल के गुणों में निहित है, जिसमें कलाकार राग की भावनात्मक तीव्रता और सौंदर्य को विस्तृत प्रकार से प्रस्तुत करता है।

हिंदुस्तानी संगीत की उत्पत्ति वैदिक काल से मानी जा सकती है, लेकिन यह 12वीं शताब्दी में कर्नाटक संगीत से भिन्न होकर प्रकाश में आया। फारसी और अरबी संगीत के प्रभाव से मुगल काल में इसका और अधिक विविधीकरण हुआ। ध्रुपद विद्या को सबसे प्राचीन तथा गरिमामयी शैली मानी जाती है, तथा ख्याल सबसे लोकप्रिय शैली है, जिसे बंदिश नामक संरचित रचनाओं के माध्यम से रागों को प्रस्तुत किया जाता है। अन्य प्रचलित शैलियों में तुमरी, टप्पा और तराना शामिल हैं। इस शैली में प्रयुक्त मुख्य वाद्ययंत्र सितार, सरोद, तबला, वीणा, तानपुरा और पखावज हैं। कई संगीत प्रशिक्षण घराना परंपरा से जुड़े हैं, जिनमें ग्वालियर, आगरा और जयपुर घराने शामिल हैं, जो सभी विशिष्ट शैलीगत परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। भाषाई दृष्टि से, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में बहुत विविधता है, जो हिंदी, उर्दू, ब्रज, अवधी, पंजाबी और मराठी जैसी भाषाओं में परिलक्षित होती है। यह भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक अभिन्न अंग है और भारत और विदेशों में इसका प्रचलन है। एक सामान्य शब्द के रूप में, इसे “संगीत” कहा जा सकता है, जिसमें गायन, वाद्य संगीत और नृत्य शामिल हैं। (1-2)

2. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की भूमिका व योगदान

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में महिलाओं के योगदान का प्रभाव और महत्व असंख्य है। यह एक तथ्य है कि इस प्रभाव और महत्व में लता मंगेशकर जी, एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी जी जैसी महान महिलाओं और वर्तमान पीढ़ी की उन महिलाओं का योगदान शामिल है जिन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत से जुड़ी कलाओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। अपने सामने आने वाली असंख्य चुनौतियों के बावजूद, वे अपनी कला को बनाए रखने में कामयाब रहे हैं और ऑल इंडिया रेडियो से लेकर सोशल नेटवर्किंग साइटों तक के प्लेटफार्मों पर प्रदर्शन करके इस विशेष कला रूप को और अधिक व्यापक बनाने के लिए जनता तक अपनी पहुंच बनाई है। (3)

3. समय के साथ बदलाव

वैदिक काल से लेकर वर्तमान तक, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की भागीदारी में वर्षों से व्यापक परिवर्तन आया है। हालांकि आरंभ में वे मुख्य रूप से दरबार या गृहस्थ की सीमाओं में बंधी रहती थीं, लेकिन संगीत अकादमियों, रेडियो, टेलीविजन और हाल ही में प्रदर्शन के अवसरों के साथ-साथ सामाजिक परिवर्तन में महिलाओं के संघर्षों ने उन्हें अपनी पहचान बनाने का अवसर प्रदान किया। आज महिलाएं संगीत शिक्षा में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं और विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त हैं, हालांकि, इस परंपरागत रूप से पुरुष प्रधान कला में लैंगिक समानता के लिए संघर्ष अभी भी जारी है।

ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

वैदिक काल से मध्यकाल तक: वैदिक काल से, जिसमें अपाला और लोपामुद्रा जैसी हस्तियां शामिल हैं, महाकाव्य काल तक, महिलाएं संगीत के सभी पहलुओं में पूर्ण रूप से पारंगत थीं और सामाजिक स्वीकृति और कलात्मक क्षमता के परिणामस्वरूप दरबारों में दरबारी संगीतकार के रूप में नियुक्त की जाती थीं।

मध्यकाल से आधुनिकता तक: नृत्य परंपरा से जुड़ी महिलाओं ने समाज में अपनी कलात्मक उत्कृष्टता के लिए सम्मान अर्जित किया। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, व्यापक

सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों के अलावा, महिलाओं ने संगीत की दुनिया में एक मजबूत और अधिक दृश्यमान स्थान का दावा करना प्रारम्भ किया। (4)

परिवर्तन के प्रमुख प्रेरक बल: शैक्षणिक संस्थानों की स्थापना: गंधर्व महाविद्यालय और भातखंडे संगीत संस्थान ने उन्हें संगीत में औपचारिक और व्यवस्थित शिक्षा प्राप्त करने का अवसर प्रदान किया।

मीडिया का प्रभाव: अखिल भारतीय रेडियो और दूरदर्शन ने देश भर में महिला कलाकारों को व्यापक श्रोताओं तक पहुँचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

सामाजिक सुधार और नारीवादी आंदोलन: सामाजिक दृष्टिकोण में परिवर्तन और नारीवादी आंदोलनों के कारण शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की स्वीकार्यता बढ़ी।

पुरस्कार और मान्यता: पद्म पुरस्कार और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार जैसे सम्मानों ने महिला कलाकारों के योगदान को औपचारिक मान्यता दिलाई। (5)

4. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में कुछ प्रमुख महिलाओं के योगदान

हीराबाई बडोदेकर जी

हीराबाई बरोडेकर जी ने भारतीय शास्त्रीय संगीत पर गहरा प्रभाव डाला और महिला कलाकारों के लिए द्वार खोलने में अग्रणी भूमिका निभाई। उन्हें पद्म भूषण और गान कोकिला उपाधि सहित कई सम्मानों से नवाजा गया। नूतन संगीत विद्यालय की स्थापना और सार्वजनिक संगीत कार्यक्रमों के माध्यम से उन्होंने संगीत के लोकतंत्रीकरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया और इसे जनमानस तक पहुँचाया, उस समय जब सार्वजनिक स्थानों पर महिलाओं के प्रदर्शन न के बराबर ही देखने या सुनने को मिलते थे। उन्होंने रंगमंच में भी योगदान दिया, फिल्मों में अभिनय किया और मराठी रंगमंच को बढ़ावा देने के लिए नूतन संगीत नाटक मंडली की शुरुआत की। भारत के स्वतंत्रता दिवस पर हीराबाई जी द्वारा “वंदे मातरम” की प्रस्तुति ने उनके राष्ट्रीय महत्व को बखूबी दर्शाया। उनकी विरासत आने वाली पीढ़ियों की महिला कलाकारों को प्रेरित करती रहेगी। (6)

किशोरी अमोनकर जी

किशोरी अमोनकर जी ने इस क्षेत्र को ऐसा प्रभावित किया जिसे लम्बे समय तक याद रखा जायेगा, विशेष रूप से जयपुर घराने में उनकी विशिष्ट गायन शैली के कारण। उन्होंने अपनी गायन शैली में गहन संगीत ज्ञान और रस सिद्धांत को समाहित किया, जिसके कारण उन्हें “गान सरस्वती” की उपाधि प्राप्त हुई। किशोरी जी ने अन्य घरानों के पहलुओं को शामिल करते हुए और अपनी गायन शैली में भावों पर विशेष ध्यान देते हुए जयपुर घराने की शास्त्रीय परिभाषा का विस्तार किया। रस सिद्धांत को शामिल करते हुए किशोरी जी ने जो पारंपरिक प्रशिक्षण प्राप्त किया था, वह “पूर्ण षड्ज की खोज” के साथ समाप्त हुआ। ख्याल गायन के अलावा, किशोरी जी ठुमरी, भक्ति गीत और फिल्मी गीतों की भी निपुण गायिका थीं। वे एक कुशल लेखिका और संगीतकार भी थीं, जिन्हें उनके कार्यों के लिए पद्म भूषण और पद्म विभूषण जैसे कई सम्मान प्राप्त हुए। शास्त्रीय गायन के क्षेत्र में लैंगिक रुढ़ियों को तोड़ने में किशोरी जी अग्रणी थीं, जिन्होंने इस क्षेत्र को एक ऐसा प्रभाव दिया जो लंबे समय तक याद रखा जाएगा। (7-8)

गंगूबाई हंगल जी

गंगूबाई हंगल जी ने ख्याल गायन में अपनी विशिष्ट आवाज और व्यक्तित्व के माध्यम से हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में व्यापक योगदान दिया। उन्होंने लिंग और जातिगत बाधाओं को तोड़ते हुए अनेकों के लिए प्रेरणा का स्रोत बनीं। संगीत के क्षेत्र में उनके योगदान को मान्यता देते हुए, उन्हें पद्म विभूषण और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार जैसे कई सम्मान प्राप्त हुए। उनकी ख्याल गायन शैली को उनकी अनूठी शास्त्रीय संगीत शैली के माध्यम से बढ़ावा दिया गया। यत्वापि उन्हें अपनी पृष्ठभूमि के कारण कई बाधाओं का सामना करना पड़ा, फिर भी उनके योगदान के फलस्वरूप आज कर्नाटक राज्य में कई संस्थान उनके नाम पर स्थापित हैं। (9)

केसरबाई केरकर जी

केसरबाई केरकर जी ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, विशेषकर जयपुर-अतरौली घराना की ख्याल गायन शैली में अपार योगदान दिया। अपनी सशक्त आवाज और विशिष्ट शैली के लिए प्रसिद्ध, केसरबाई जी ने कम प्रचलित रागों को संगीत की दुनिया में पेश किया और किशोरी अमोनकर जी सहित कई संगीतकारों को प्रभावित किया। राग भैरव में उनका सबसे प्रसिद्ध गीत, “जात कहां हो,” वॉयजर 1 अंतरिक्ष यान द्वारा अंतरिक्ष में भेजा गया और साउंड्स ऑफ द अर्थ का हिस्सा बन गया। 1967 में लाइव प्रस्तुतियों को विराम देने के बावजूद, केसरबाई जी ने कला के प्रति अपना समर्पण जारी रखा और उन्हें 1969 में “सुश्री” पुरस्कार और पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। (10-11)

5. हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की चुनौतियों

हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाएं लंबे समय से एक अभिन्न अंग रही हैं, लेकिन उन्हें पितृसत्तात्मक व्यवस्थाओं, भूमिकाओं और प्रस्तुतियों से जूझना पड़ा है। आमतौर पर, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में उन्हें पार्श्व वादक या संगतकार के रूप में सहायक भूमिका तक ही सीमित रखा गया है, जबकि वे पश्चिमी या जैज़ संगीत जैसी अन्य शैलियों या परंपराओं में मुख्य कलाकार के रूप में अपनी पहचान बना सकती थीं, जहां उन्हें तबला जैसे लिंग भेद वाले वाद्ययंत्रों के साथ अपनी छाप छोड़ने के लिए संघर्ष नहीं करना पड़ा। सुकन्या रामगोपाल और रिम्पा शिवा जैसी कलाकार आज इस धारणा को बदल रही हैं।

इसके अलावा, ऐसी रचनाओं में महिलाओं का चित्रण उनकी अधीनता और सशक्तिकरण की कमी को भी दर्शाता है। हालांकि, शुभा मुद्गल जैसी कलाकार अपनी रचनाओं में ऐसी पारंपरिक प्रस्तुतियों को चुनौती दे रही हैं और अपने संगीत के माध्यम से सशक्त महिलाओं को बढ़ावा दे रही हैं। साथ ही, महिला संगीतकारों के अवसर केवल अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस जैसे प्रतीकात्मक आयोजनों के माध्यम से मान्यता प्राप्त करने तक ही सीमित रहे हैं। हालांकि, सोशल मीडिया के विकास और समाज की मानसिकता में बदलाव से संकेत मिलता है कि अंततः महिलाओं के लिए अपनी पहचान चुनने और हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में अपनी जगह को फिर से परिभाषित करने की दिशा में कुछ सकारात्मक बदलाव हो रहा है। (12)

6. निष्कर्ष

पितृसत्तात्मक संरचनाओं और लैंगिक सीमाओं से उत्पन्न चुनौतियों के बावजूद, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं का योगदान गहरा, निरंतर और परिवर्तनकारी रहा है। वैदिक काल से लेकर

समकालीन युग तक, महिलाओं ने न केवल इस समृद्ध संगीत परंपरा को संरक्षित किया है, बल्कि इसके कलात्मक, शैक्षिक और सांस्कृतिक आयामों को भी आगे बढ़ाया है। हीराबाई बडोदेकर—जी, केसरबाई केरकर जी, गंगूबाई हंगल जी और किशोरी अमोनकर जी जैसी महान संगीतकारों के जीवन से यह स्पष्ट होता है कि महिलाओं ने सामाजिक प्रतिबंधों को चुनौती दी है, प्रदर्शन स्थलों को पुनर्व्यवस्थित किया है और परंपरागत रूप से पुरुष—प्रधान क्षेत्र में अपनी सशक्त आवाज उठाई है।

इस संदर्भ में, समय के साथ—साथ, औपचारिक संगीत संस्थानों, जनसंचार माध्यमों, सामाजिक सुधार आंदोलनों और पुरस्कारों द्वारा राज्य द्वारा दी गई मान्यता ने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की दृश्यता और स्वीकार्यता बढ़ाने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। हालांकि सोशल मीडिया जैसे समकालीन मंचों ने पहुंच और मान्यता को और अधिक लोकतांत्रिक बनाया है, लेकिन इसका अर्थ यह भी है कि लैंगिक असमानता अभी भी समाप्त नहीं हुई है। महिला संगीतकार प्रतिनिधित्व, अवसरों और कलात्मक स्वायत्तता के मुद्दों के प्रति गंभीर रूप से जागरूक रहीं और उन्हें इन मुद्दों पर विचार—विमर्श करना पड़ा।

हालांकि, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में प्रदर्शनकारी, संगीतकार, शिक्षक और नवप्रवर्तक के रूप में महिलाओं का उदय इस परंपरा में एक ताजगी भरा बदलाव लाने का वादा करता है। हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं की भूमिका इस अमूल्य सांस्कृतिक विरासत की निरंतरता और विकास सुनिश्चित करने में मूलभूत है, न कि केवल इस कला रूप में उनका योगदान पूरक है। इसलिए, इस संदर्भ में हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत में महिलाओं के महत्व को कम करके नहीं आंका जा सकता।

सन्दर्भ

1. Gharana, I. (द.क.). Art Gharana premium online music academy- Artgharana-com- Retrieved December 30] 2025] from <https://www-artgharana-com/blogs/music/hindustani&classical&music&journey>
2. भारतीय शास्त्रीय संगीत की समृद्ध धरोहर. (2024). Akhil Bharatiya Gandharva Mahavidyalaya Mandal- <https://abgmvm-org/the&rich&heritage&of&indian&classical&music&2/>
3. डॉ० अनिता रानी महिलाओं का कलाओं के क्षेत्र में योगदानः Artistic Narration 2020] Vol- XI] No- II] pp- 111&115 https://anubooks-com/\page_id%6393
4. Upadhaya] R-] ¼2020½- laxhr ds {ks= esa efgyk l'kfädj.k Socialresearchfoundation-com- Retrieved January 6- 2026] from <https://socialresearchfoundation-com/upoadreserchpapers/7/387/2010300655401st%20Oricha%20upadhyay-pdf>
5. Sharma] R-M-] ¼2023½- Role and Representation of Women in Indian Classical Music: A Historical Analysis- International Research Journal of Education and Technology 5¼8½ 207& 213-<https://www-irjweb-com/Role%20and%20Representation%20of%20Women%20in%20Indian%20Classical%20Music%20A%20Historical%20Analysis-pdf>

6. Ghosh] R- ¼2019½- Hirabai Barodekar: First Indian woman artist to hold ticketed concerts- Feminism in India- <https://feminisminindia-com/2019/03/13/hirabai&barodekar&hindustan&music&singer/>
7. राजपूतब्रह्मानंद. (2017). किशोरी अमोनकर के शास्त्रीय संगीत में भारतीय संस्कृति की आत्मा बसती थी. मूडकनदपं- https://hindi-webdunia-com/my&blog/kishori&tai&117041000021_1-html
8. Britannica Editors ¼2025½- Kishori Amonkar- Encyclopedia Britannica- <https://www-britannica-com/biography/Kishori&Amonkar>
9. Gorlinski] V- ¼2025½ July 18½- Gangubai Hangal- Encyclopedia Britannica- <https://www-britannica-com/biography/Gangubai&Hangal>
10. Kesrbai kerkar ¼n-d-½- Parrikar-org- Retrieved January 6] 2026] from <https://www-parrikar-org/vpl/catalogue/hindustani/kesarbai&kerkar/>
11. Kesrbai kerkar ¼n-d-½- Gov-In- Retrieved January 6] 2026] from <https://indianculture-gov-in/hi/node/2686651>
12. Share] B- C- ¼n-d-½- Women in the field of Classical music in India- Cdpp-Co-In- Retrieved December 26] 2025] from <https://www-cdpp-co-in/articles/women&in&the&field&of&classical&music&in&india>